RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

भक्ति सूफी परम्पराएं

Chapter-6 | Part-2

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. पूजा प्रणालियों का समन्वय
2. महान व लघु परंपराएँ
3. भेद एवं संघर्ष
4. उपासना की कविताएँ
5. जाति के प्रति दृष्टिकोण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भक्ति आ०

1) सगुण
(निर्गुण)
शिव
नायनार
अलवार
विष्णु

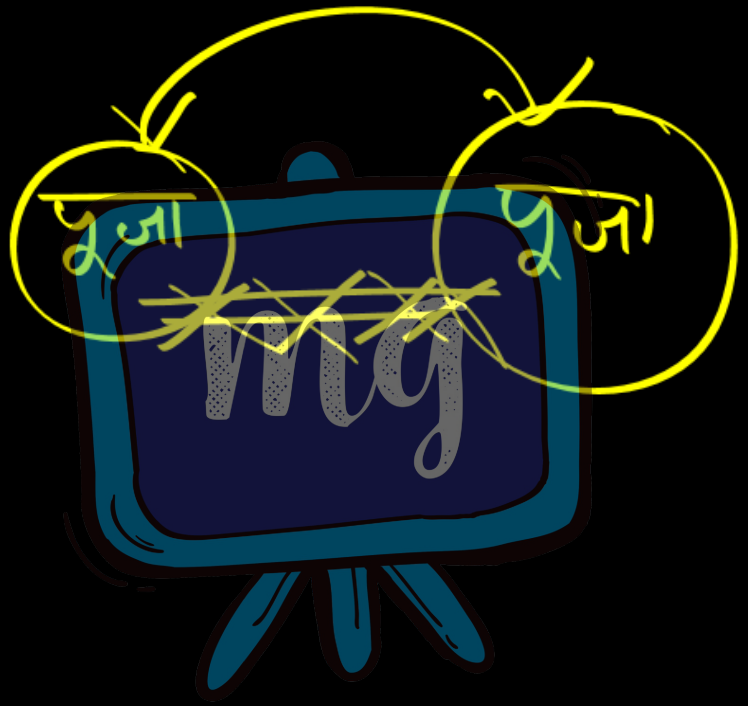

पूजा पूजा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पूजा प्रणालियों का समन्वय :-

- इतिहाकारों के अनुसार पूजा प्रणाली के सम्बन्ध में दो प्रक्रियाओं का उल्लेख मिलता है।

1. पहली प्रक्रिया ब्राह्मणवादी विचारधारा के प्रसार से संबंधित थी।

- इसमें ब्राह्मणवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार परिश्रमपूर्वक – पौराणिक ग्रन्थों की रचनाओं का संकलन करके किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये पौराणिक ग्रन्थ सरल संस्कृत भाषा में रचे गये थे और वैदिक विधा से विहीन स्त्रियों व शुद्रों द्वारा भी ये ग्राह्य थे।

2. इसी काल की दूसरी प्रक्रिया में स्त्रियों, शुद्रों और अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं एवं आचरणों को ब्रह्मणों द्वारा स्वीकृति दे कर, उन्हें नये रूप में पेश किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- समाजशास्त्रियों ने सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई अनेक धार्मिक विचारधाराओं और पद्धतियों को 'महान' संस्कृत पौराणिक परिपाटी एवं ''लघु'' परम्पराओं के बीच पारस्परिक संवाद का परिणाम बताया है।

'महान' 'लघु'

'महान' → मुख्य देवता

'लघु' → लोक देवता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

"महान" और "लघु" परंपराएँ

"महान" और "लघु" जैसे शब्द बीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्री राबर्ट रेडफील्ड द्वारा एक कृषक समाज के सांस्कृतिक आचरणों का वर्णन करने के लिए मुद्रित किए गए। इस समाजशास्त्री ने देखा कि किसान इन कर्मकांडों और पद्धतियों का अनुकरण करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जिनका समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग जैसे पुरोहित और राजा द्वारा पालन किया जाता था। इन कर्मकांडों को रेडफील्ड ने "महान" परंपरा की संज्ञा दी। साथ ही कृषक समुदाय अन्य लोकाचारों का भी पालन करते थे जो इस महान परिपाटी से सर्वथा भिन्न थे। उसने इन्हें "लघु" परंपरा के नाम से अभिहित किया। रेडफील्ड ने यह भी देखा कि महान और लघु दोनों ही परंपराओं में समय के साथ हुए पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण परिवर्तन हुए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रक्रिया का सबसे विशिष्ट उदाहरण पुरी (जगन्नाथपुरी), उड़ीसा में मिलता है जहाँ मुख्य देवता को बारहवीं शताब्दी तक आते-आते जगन्नाथ (जिसका शाब्दिक अर्थ सम्पूर्ण विश्व का स्वामी है), विष्णु के एक स्वरूप के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- इस उदाहरण में एक स्थानीय देवता को जिसकी प्रतिमा को पहले व आज भी लकड़ी से स्थानीय जनजाति के विशेषज्ञों द्वारा गढ़ा जाता है, भगवान विष्णु के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- विष्णु का यह स्वरूप देश के अन्य भागों में मिलने वाले स्वरूपों से सर्वदा भिन्न था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

8. महान	लघु
विष्णु	लोक देवता

1. महान
2. लघु
3. म/लघु अंतर
4. महान/लघु किस ?
5. टिकलेख

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भेद एवं संघर्ष

वैदिक परिपाटी के प्रशंसक

- ईश्वर की उपासना के लिए मंत्र व यज्ञों को अनिवार्य मानते थे।
- देवता – अग्नि, इन्द्र, सोम

वैदिक परिपाटी की अवहेलना करने वाले

- तांत्रिक अराधना में लगे थे।
- यहाँ वैदिक देवता पूरी तरह गौण हो गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वैदिक व पौराणिक परम्परा के बीच तुलना करने पर यह अन्तर या विषमता और स्पष्ट रूप से सामने आती है।
- जहाँ एक ओर वैदिक देवकुल के देवता अग्नि, इन्द्र, सोम आदि गौण हो जाते हैं और साहित्य व मूर्तिकला में उनका निरूपण दिखाई नहीं देता।
- इन सभी असंगतियों के बाद भी वेदों को प्रमाणिक माना जाता रहा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन परिस्थितियों में कई बार संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती थी।
- वैदिक परम्पराओं को मानने वाले उन लोगों की निन्दा करते थे जो ईश्वर की उपासना के लिए मंत्रों के उच्चारण व यज्ञों के सम्पादन का विरोध करते थे।
- इस समय शिव व विष्णु के अनुयायी भी अपने-अपने इष्टदेव को सर्वोच्य प्रक्षेपित करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बौध व जैन धर्म के सिद्धांतों व धर्म को मानने वाले धर्मालम्बियों के संबंध भी कभी-कभी तनावपूर्ण हो जाते थे। हालांकि स्पष्ट विरोध कम ही दिखाई देता था। भक्ति परम्परा को हमें इसी संदर्भ में देखना होगा।

Q. वैदिक परिपाटी को मानने वाले और उनकी अवहेलना करने वालों के बीच अंतर स्पष्ट करें?

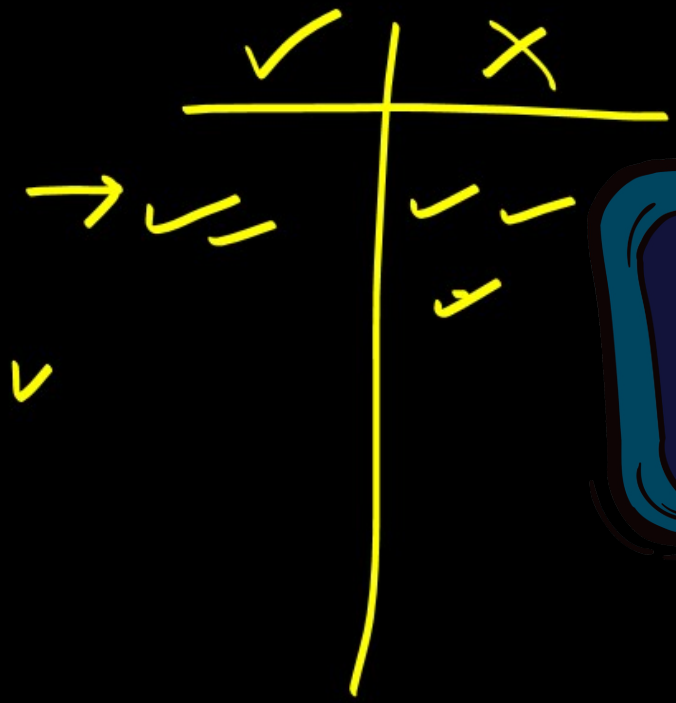

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपासना की कविताएँ :-

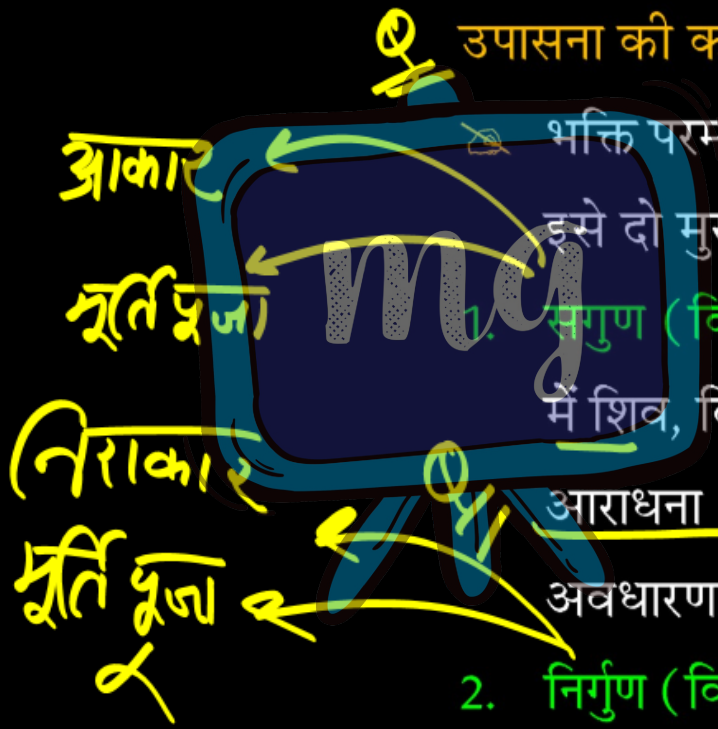

भक्ति परम्परा का वर्णन करने वाले इतिहासकार इसे दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं –

1. सगुण (विशेषण सहित) :- सगुण भक्ति धारा में शिव, विष्णु तथा उनके अवतार व देवियों की आराधना की जाती थी, जिनकी मूर्त रूप में अवधारणा हुई।

2. निर्गुण (विशेषण विहीन) :- निर्गुण भक्ति परम्परा में अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

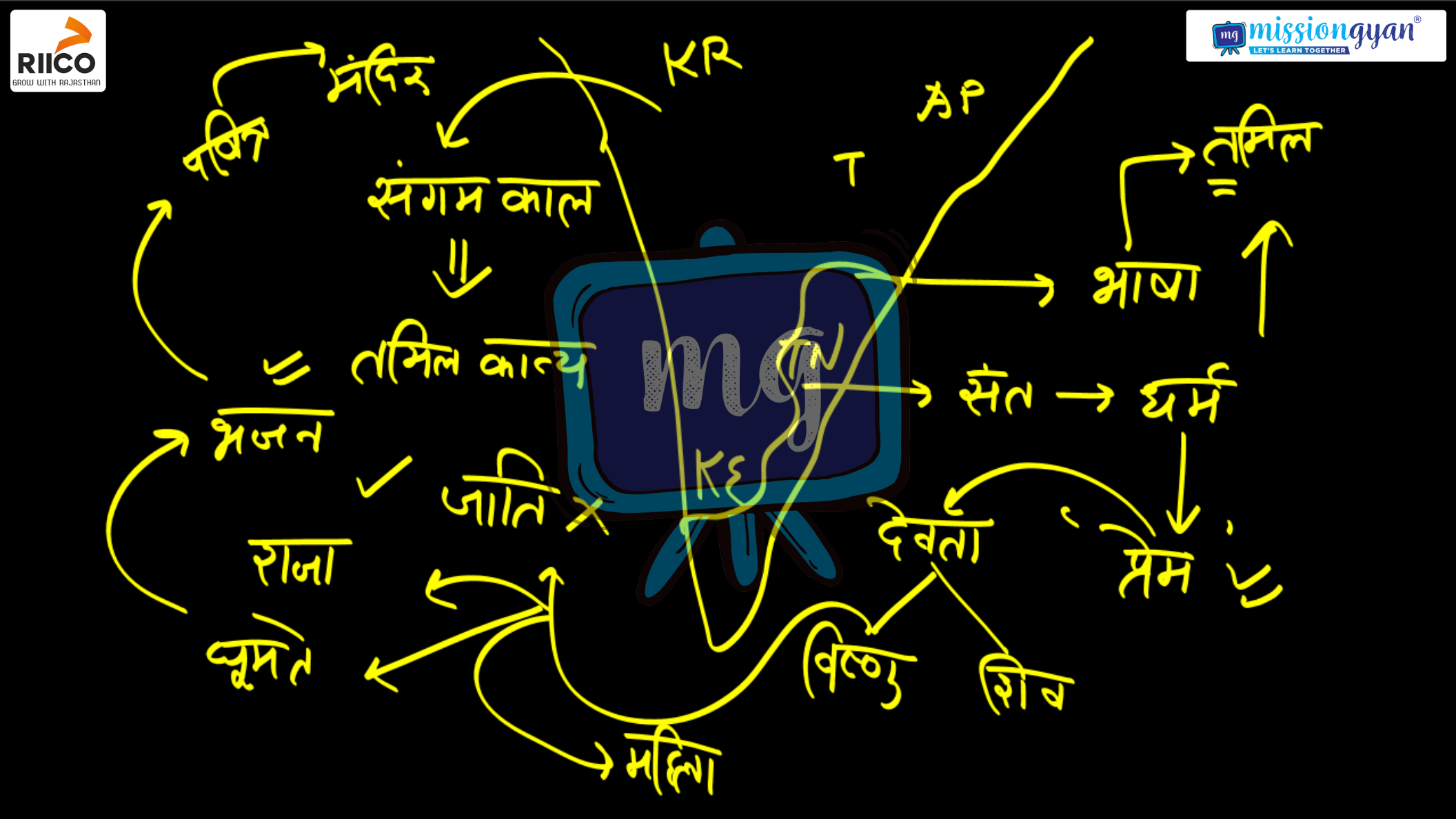

मंदिर
KR
AP
T
भक्ति
संगम काल
तमिल
तमिल काव्य
भाषा
भजन
संत
धर्म
जाति
राजा
देवता
प्रेम
शूद्र
विष्णु
शिव
महिला

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत :-

- लगभग छठी शताब्दी के प्रारंभ में भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत में अलवारों (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनारों (शिव भक्त) के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।
- अलवार व नयनार संत एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए अपने इष्ट विष्णु व शिव की स्तुति में भजन गाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उस भ्रमण व यात्राओं के दौरान अलवार व नयनार संतों ने कुछ पावन व पवित्र स्थानों को अपने इष्ट का निवास घोषित किया।
- बाद में इन्हीं स्थानों पर विशाल मन्दिरों का निर्माण किया गया व ये स्थल तीर्थ स्थल माने गये।
- यहां संत कवियों के भजनों को इन मंदिरों के अनुष्ठानों में गाया जाता था।
- इन संतों की प्रतिमाओं/मूर्तियों की भी यहां पूजा की जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जाति के प्रति दृष्टिकोण

- अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज़ उठाई।
- भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हें "अस्पृश्य" माना जाता था।
- अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधम् का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस तरह इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्री भक्त :-

- दक्षिण भारत में भक्ति परम्परा की सबसे बड़ी विशिष्टता इसमें स्त्रियों की उपस्थिति थी।
- अंडाल नामक अलवार (विष्णु भक्त) स्त्री के भक्ति गीत व्यापक स्तर पर गाये जाते थे तथा आज भी गाये जाते हैं।
- इसी प्रकार एक स्त्री शिव भक्त करइक्काल अम्मइयार हुई।
- इन्होंने भक्ति हेतु घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नयनार (शिव भक्त) परंपरा में उनकी कविताओं/रचनाओं को सुरक्षित किया गया।
- इन स्त्रियों ने अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का परित्याग किया। ये भिक्षुणी समुदाय या अन्य वैकल्पिक व्यवस्था की सदस्य नहीं बनी।
- इनकी रचनाओं और जीवन पद्धति से ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने उस समय प्रचलित पितृसत्तात्मक आदर्शों को चुनौती दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

९. अलवार ९. नायनार
९. संतो ९. मंदिर
९. स्त्री ९. जाति
९. तमिल वेद.

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भक्ति साहित्य का संकलन

- दक्षिणी भारत में दसवीं शताब्दी आते-आते बारह अलवर (विष्णुभक्त) सन्तों की रचनाओं का संकलन किया गया।
- इस संकलन को ''नलयिरादिव्यप्रबंधम्'' नाम से जाना जाता है।
- इस का अर्थ ''चार हजार पावन रचनाएँ'' है।
- दसवीं शताब्दी में अप्पार संबंदर और सुंदरार की भक्ति की कविताएँ ''तवरम'' नामक संकलन में रखी गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राज्य के साथ संबंध :-

- प्रथम सहस्त्राब्दी ई. के उत्तरार्ध में तमिल क्षेत्र में कई राज्यों का उद्भव व विकास हुआ।
- जिनमें पल्लव और पांड्य राज्य शामिल थे।
- इस समय दक्षिण भारत में जैन व बौध धर्म मौजूद थे।
- इन धर्मो को व्यापारी व शिल्पी वर्ग का आश्रय प्राप्त था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन धर्मों को राजकीय आश्रय, संरक्षण और अनुदान यदा-कदा ही प्राप्त होता था।
- तत्कालीन तमिल भक्ति रचनाओं की एक मुख्य विषय वस्तु बौध व जैन धर्म के प्रति उनका विरोध है।
- इतिहासकारों के अनुसार विरोध का मुख्य कारण धार्मिक समुदायों में राजकीय अनुदान को लेकर मुकाबला रहता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- नवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में शक्तिशाली चोल सम्राटों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परंपरा को समर्थन किया।
- इन्होंने विष्णु और शिव मंदिरों के निर्माण हेतु भूमि अनुदान दिए।
- चोल सम्राटों की मदद से दक्षिण में चिदम्बरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम में विशाल शिव मंदिरों का निर्माण हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चिदम्बरम

तंजावुर

गंगैकोंडचोलपुरम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कांस्य से ढाली गई शिव प्रतिमाओं का निर्माण भी इसी काल में हुआ।
- दक्षिण में अलवार व नयनार संत, वेल्लाल कृषकों से सम्मानित होते थे।
- तत्कालीन शासकों ने इसी कारण से उनका समर्थन पाने का प्रयास किया।
- चोल सम्राटों ने दैवीय समर्थन या अंश होने का दावा किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सत्ता के प्रदर्शन के लिए सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया।
- मंदिरों में सुन्दर पत्थर व धातुओं से सुसज्जित मूर्तियां स्थापित की।
- चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई जिन्हें उत्सव में एक जुलुस में निकाला जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आन्दोलन का उद्भव हुआ।
- नेतृत्व :- बासवन्ना **(1106-68)** नामक ब्रह्मण के द्वारा किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बासवन्ना

- ये कलचुरी के राजा के दरबार में मंत्री थे।
- इनके अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) व लिंगायत कहलाए।
- ये शिव की आराधना लिंग के रूप में करते है।
- लिंगायत समुदाय के पुरुष वाम स्कंध (बायां कंधा) पर चाँदी के एक पिटारे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लिंगायतों ने जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के ''दूषित'' होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया।
- पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर भी प्रश्न चिह्न लगाया।
- इन सब कारणों से ही ब्रह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को गौण स्थान मिला था वे लिंगायतों के अनुयायी हो गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लिंगायतों ने वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह आदि को भी मान्यता प्रदान की, जिन्हे धर्मशास्त्रों में अस्वीकार किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अनुष्ठान और यथार्थ संसार

यह बासवन्ना द्वारा रचित एक वचन है:

जब वे एक पत्थर से बने सर्प को देखते हैं
तो उस पर दूध चढ़ाते हैं
यदि असली साँप आ जाए तो कहते हैं
"मारो-मारो"।
देवता के उस सेवक को, जो भोजन परोसने
पर खा सकता है वे कहते हैं "चले जाओ!
चले जाओ।"
किन्तु ईश्वर की प्रतिमा को जो खा नहीं
सकती, वे व्यंजन परोसते हैं।